8 - पंजाब में मोहयाल वैद जाति का राज

काबुल के दत्त राजवंश के तीसरे राजा भीमदेव का कोइ बेटा नहीं था. उस ने जब वृद्धावस्था में स्वेच्छा से प्राण त्यागने का निश्चय किया, उसे पड़ोस में किसी शत्रु से भय नहीं था क्योंकि उसकी राजसत्ता उस समय चरमोत्कर्ष पर थी. अनुमानतः उस के निर्णय के अनुसार, तथा उसके सामंतों के परामर्श से, अफ़ग़ानिस्तान के राज्य का पंजाब में विलय करना निश्चित किया गया. उस समय पृथ्वीपाल पंजाब का राजा था. एक वर्ष के अंदर पृथ्वीपाल का देहांत हो गया और उसका बेटा जयपाल सिंहासन पर आरूढ़ हुआ. इस पंजाब राजवंश का, या उस समय के इतिहास का, कोई वर्णन पाठ्य पुस्तकों में नहीं है. पृथ्वीपाल और जयपाल कौन थे? यहां हम नई खोज के स्रोतों से उनका विवरण दे रहे हैं.

ईस्वी सम्वत की आरम्भिक शताब्दियों में अफ़ग़ानिस्तान, मध्यभारत, सिंध, कश्मीर आदि के शासक जब भी शक्तिशाली रहे, पंजाब के कई भागों पर अपना शासन अथवा प्रभुत्व स्थापित करने में सफल हुए. इस अराजकता के मध्य में, नवमी शताब्दी के आरम्भ में, सरहिंद से उठकर एक योद्धा ब्राह्मण बचनपाल ने पंजाब पर अपना शासन जमाना आरम्भ कर दिया. उसके देहान्तोपरांत, 866 ई से, उसके पुत्र राजा रणसिंह और फिर 891 ई से उसके पौत्र राजा वीरसिंह ने पंजाब पर शासन किया. 936 ई में वीरसिंह के निधन पर उसका इकलौता बेटा, और युवराज, महाराजा पृथ्वीपाल राजसिंहासन पर सुशोभित हुआ. **पंजाब का यह राजवंश आज की मोहयाल वैद जाति के पूर्वज थे**. (रायज़ादा हरिचंद वैद द्वारा लिखित *गुलशन-ए-मोहयाली* - भाग 2, पृ 80-82).

जयपाल

जैसे ऊपर कहा गया है, पृथ्वीपाल का बेटा जयपाल था. जयपाल "सरहिंद से काबुल तक लंबे और मुल्तान से कश्मीर तक चौड़े" विस्तृत क्षेत्र का सार्वभौम स्वामी हो गया. (इतिहासकार - फरिश्ता). अपने पैतृक पंजाब राज्य का संचालन अपने पुत्र आनंदपाल को सौंप क़र स्वयं अफ़ग़ानिस्तान में काबुल क्षेत्र का शासन अपनी राजधानी उद्भांडपुरा (विहिन्ड) से करने लगा. अफ़ग़ानिस्तान से मिली एक शिलालेख में उसको "परम भट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर श्री जयपालदेव" कहा गया है. (*जयपाल राज्य के समय की बारीकोट शिलालेख*, देखें *अफ़ग़ानिस्तान रीविजिटेड*, पृ. 108-109). भीमदेव की भी यही उपाधियाँ थीं.

जब जयपाल का राज्याभिषेक हुआ, काबुलशाही वंश की प्रथा के अनुसार (जैसे भीमदेव), वह अपने वंशागत "पाल" नाम के अंत में "देव" जोड़क़र "जयपालदेव" कहलाने लगा. दुर्भाग्यवश उस के जीवनकाल में ही उसके राज्य का अफ़ग़ानिस्तान भाग उनकी सम्प्रभुता से निकल गया और, इस

कारण, उसके उत्तराधिकारी आनंदपाल, त्रिलोचनपाल और भीमपाल ने अपने नामों के साथ "देव" नहीं लगाया.

"*जयपालदेव के समय की हुण्ड शिलालेख*" में उद्भाण्ड से भीमदेव और जयपाल के शासन की पुष्टि बड़ी रोचक है. "सिंधु नदी के उत्तर में एक उद्भाण्ड नाम का नगर है ... वहां पर महाबली, राजाधिराज भीम का शासन था जिसने शत्रुओं को पराजित क़र के देश को सुरक्षित रखा ... उस देश का राजा अब जयपालदेव है ..." (*अफ़ग़ानिस्तान रीविज़िटिड*, पृ. 171-172).

जयपाल ने दो दशकों तक अफ़ग़ानिस्तान में शान्ति से राज किया. पड़ोस में ग़ज़नी में एक नई शक्ति उभर रही थी. वहां के सुल्ताम सबुकतिगीन ने कई छोटे बड़े मुस्लिम राज्यों के प्रदेश छीन क़र अपनी सत्ता बहुत बढ़ा ली थी. उसका काबुल के हिन्दू राज्य से संघर्ष होना ही था. जयपाल ने तुर्कों को पीछे धकेलने और समस्या का सदैव के लिए समाधान करने का निश्चय किया. उसने दो बार गज़नी पर आक्रमण किया परन्तु अपने ध्येय में सफल न हो सका. प्रत्याक्रमण में दर्रा पार का अफ़ग़ानिस्तान का भाग हिन्दू भारत के हाथ से निकल गया. ग़ज़नी के राज्य की शक्ति अब और बढ़ चुकी थी. 17 नवंबर, 1001 ई को पेशावर के समीप सबुकतिगीन के बेटे महमूद ग़ज़नवी से जयपाल पराजित हुआ. (महमूद के इतिहासकार "उतबी" द्वारा लिखित *किताब-अल-यामनी, एलियट एन्ड डाउसन* - 2 - पृ 28 पर आधारित).

यह दिन जयपाल के लिये ही नहीं भारत के लिये भी दुर्भाग्यपूर्ण और घातक सिद्ध हुआ. दर्रा खयबर भारत के नियंत्रण से निकल जाने पर विदेशी आक्रमकों के लिए सदा के लिए द्वार खुल गया. यह भारत की गुलामी की शरुआत थी. जयपाल वृद्ध हो रहा था. भारतीय मान्यताओं के अनुरूप, और उसके पूर्ववर्ती भीमदेव के समान, जयपाल ने भी स्वेच्छा से प्राण त्याग दिए. यह जयपाल का, एक कर्मयोगी के समान, क्रियाशील जीवन से दुर्भाग्यपूर्ण परन्तु उदात्त और शोभनीय प्रस्थान था.

ग़ज़नी के सुलतान महमूद के दरबारी कवि ने लिखा था:

> "हिन्दू राजा जयपाल के बारे में आपने सुना ही होगा. दुनिया के किसी भी राजा से वह बड़ा है. आसमानों के सितारों से भी अधिक उसकी सेना है. सारी पृथ्वी के पत्थर भी उसकी तुलना में कम होंगे. उसकी सेना की तलवारें सुबह के आसमान की तरह लाल रंग की हो गयी हैं, इतना शत्रु का खून उन्हों ने बहाया है. काले धुएँ से उभरने वाली लाल जिह्वा के समान चमकते हुए उनके भाले देखे होते तो आप कहते नर्क में जाएँ यह लोग ! उनके डर से मस्तिष्क सुन हो जाता है, आँखें चौंधया जाती हैं". (*इलियट एन्ड डाउसन* -4- पृ. 515-516).

आनंदपाल

जयपाल के पश्चात आनन्दपाल राजा बना. सिंध और सतलुज नदियों के बीच पंजाब क्षेत्र ही अब उसके आधीन रह गया था परन्तु महमूद के भारत पर आक्रमण के रास्ते में यह बड़ी रुकावट थी. आनंदपाल ने युद्ध की तैयारी आरम्भ कर दी और फरिश्ता के अनुसार इस संघर्ष के लिए जनता में बड़ी जागृति थी. 1008 ई में पेशावर के पास हिन्दू और तुर्क सेनाएं आमने सामने थीं. 40 दिन तक किसी ने युद्ध आरम्भ नहीं किया. हिन्दू सेना में प्रति दिन बढ़ती संख्या से घबरा कर महमूद ने एक दिन 6000 धनुषधारी आगे भेजे. परन्तु हिन्दू सेना से 30,000 खोखर (गखड़) बढ़े और थोड़ी सी देर में 5000 मुस्लिम उनके शिविरों में जाकर मर डाले. फरिश्ता के अनुसार प्रभात से सायंकाल तक युद्ध होता रहा और काफर (हिन्दू) जीतने ही वाले थे. परन्तु नेफ्था के जलते गोलों से बेकाबू हो कर हिन्दू राजकुमार जिस हाथी पर सवार था भाग निकला. यह देख कर कि उनका नायक रणभूमि से भाग कर जा रहा था हिन्दू सेना में अफरा तफरी मच गयी और वह भी भागने लगे. आनंदपाल की इस हार का लाभ उठा कर महमूद तेज़ी से बढ़ा और नागरकोट के विख्यात मन्दिर से अपार सम्पत्ति लूट ली.

त्रिलोचनपाल और भीमपाल

आनंदपाल का स्वर्गवास कब हुआ इसकी ठीक जानकारी नहीं है. अनुमानत: 1010-1011 ई में जब सापेक्ष कुछ शांति थी उनका देहांत माना जा सकता है. उनका बेटा त्रिलोचनपाल, उनका उत्तराधिकारी था. उस समय यह 'शाही' राजवंश "लाहौर के राजा" के सम्बोधन से अधिक विख्यात थे परन्तु उनकी मुख्य राजधानी अब "नन्दना" थी. पंजाब की नमक की पहाड़ी में, कटास राज के समीप, यह एक सुरक्षित स्थान पर दुर्ग था. 'भेरा' के व्यवसायक नगर और जेहलम नदी के समीप स्थित होने के इलावा, उस समय का लाहौर-काबुल अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य मार्ग भी उधर से ही गुजरता था.

1014 ई में महमूद एक भारी सेना ले कर नन्दना की और कूच कर के आया. उसको रोकने का दायित्व अपने बेटे भीमपाल पर छोड़कर, त्रिलोचनपाल स्वयं एक सेना की टुकड़ी के साथ कश्मीर की ओर गया. नन्दना से पुंछ की ओर 'टोही घाटी' का क्षेत्र उस समय शाही राज्य का भाग था.

भीमपाल (जिसको समकालीन इतिहासकार 'उतबी ' ने "निडर भीम" कहा है) आगे बढ़ा. रावलपिंडी के पास एक पहाड़ी दर्रे के पीछे हाथी खड़े कर के तुर्क सेना को रोका और अपनी सेना वहां एकत्रित की. जब भीमपाल तैयार हो गया तो उस ने युद्ध आरम्भ होने दिया. घमासान युद्ध हुआ. एक तुर्क सेनानायक बुरी तरह घायल हो गया तो महमूद ने अपने अंगरक्षक भेज कर उसको निकलवाया. युद्ध जारी रहा परन्तु तुर्क जीत गए. महमूद ने आगे बढ़कर नंदना के दुर्ग को घेरा. कड़ा प्रतिरोध हुआ और तुर्कों को दीवार की नीचे सुरंग लगानी पड़ी. उतबी का कहना है कि वहां पर एक प्राचीन शिलालेख भी थी. ("उतबी", *किताब-अल-यामनी, एलियट एन्ड डाउसन* - 2 - पृ 38-39 पर आधारित).

त्रिलोचनपाल के कहने पर उसकी सहायता के लिए कश्मीर नरेश संग्रामराज (1003-1028 ई) ने एक सेना दल के साथ अपने सेनानायक 'तुंग' को भेजा. अपने अनुभव के अनुसार त्रिलोचनपाल ने पहाड़ी युद्ध का निर्णय लिया परन्तु तुंग ने उतावलापन में मैदान में युद्ध आरम्भ कर दिया जिसका परिणाम प्रतिकूल हुआ. लूटमार के अतिरिक्त महमूद ने बहुत जनता का बलात धर्म परिवर्तन किया.

'शाही' नाम से जाने वाले इस राजवंश की सम्प्रभुता पर यह कढोर आघात था परन्तु ये दृढसंकल्प वीर आसानी से पराजय नहीं मानते थे. जेहलम नदी के दक्षिण-पूर्व में, रावी नदी के तट पर स्थित लाहौर तक का क्षेत्र अभी भी इन के पास था. उसके लिए मेहमूद को एक और आक्रमण करना पड़ा और तब पंजाब को गज़नी राज्य में सम्मिलित कर लिया गया.

प्रायः कहा जाता है कि महमूद अपने किसी आक्रमण में असफल नहीं रहा परन्तु ऐसा नहीं है. पंजाब में शाही शक्ति बहुत कम हो जाने पर भी महमूद को वहां से हो कर भारत के मध्य में लूट मार के लिए जाने में इन से ड़र लगा रहता था. शाही शासक की खोज में, और कश्मीर 1015 ई में महमूद ने लोह कोट पर हमला किया. लोह कोट कश्मीर का प्रवेश द्वार ही था. हिमपात से पूर्व उसे कब्ज़ा करना था. भीमपाल के नेतृत्व में हिन्दू सेना ने ऐसा प्रतिकार किया कि यह गढ़ अविजित रहा. महमूद की बहुत सी सेना वापिस लौटते हुए नष्ट हो गयी. (*फरिश्ता* (ब्रिग्ग:अनुवाद) पृ 32)

पंजाब के इस ब्राह्मण राजवंश क़ी सत्ता बहुत कम हो गयी थी पर दृढ संकल्प वैसा ही था. भारत में उस समय कालंजर का राजा विद्याधर सबसे शक्तिशाली था. त्रिलोचनपाल ने उस के साथ मिलकर तुर्कों के विरुद्ध प्रतिरोध की योजना बनाई परन्तु विद्याधर की टाल मटोल से, जिसने पंजाब में सेना भेजने का वचन दिया था, यह कार्यान्वित न हो सकी. इसी अभियान के दौरान घायल हो जाने पर त्रिलोचनपाल का कहीं देहांत हो गया. **एक मोहयाल वीर, वीरगति को प्राप्त हुआ. इसी की साथ पंजाब में मोहयाल राज का अंत तो हुआ ही, उत्तर-पश्चिम भारत के निडर प्रहरी चले जाने से देश क़ी स्वतंत्रता भी खतरे में पड़ गयी.**

कश्मीर के इतिहास 'राजतरंगिणी' में, टोही घाटी की समीप जो युध हुआ उसके संदर्भ में, त्रिलोचनपाल क़ी इस प्रकार प्रशंसा की गयी है :

> "अनगिनत शत्रु भी जिसको पराजित नहीं कर सके उसकी महत्ता का कौन वर्णन कर सकता है ? युद्ध में शत्रुओं का रक्त प्रवाहित करने वाला त्रिलोचनपाल, कल्पांत के समय सृष्टी को अपने तीसरे नेत्र से दग्ध करने वाले शिव के समान ही था. करोड़ों शस्त्रसज्ज शत्रु सैनकों से घिरा हुआ (त्रिलोचनपाल) अकेला सब से लड़ता हुआ उनके घेरे से बाहर आया. जब त्रिलोचन दुनिया के पार चला गया तब सारी सृष्टी भयंकर चाण्डालों से आच्छादित हो गयी. त्रिलोचनपाल क़ी अलौकिक वीरता क़ी स्मृति से विजय प्राप्त करने पर भी शत्रु खुलेपन से श्वास नहीं ले सका."